


---

mahArudrastotram

——  
महारुद्रस्तोत्रम्

——  
Document Information



---

Text title : mahArudrastotram

File name : mahArudrastotram.itx

Category : shiva

Location : doc\_shiva

Proofread by : PSA Easwaran

Description-comments : Brihatstotraratnakara 1, Narayana Ram Acharya, Nirnayasagar,  
stotrasankhya 211

Latest update : January 19, 2017

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 30, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



महारुद्रस्तोत्रम्



श्रीगणेशाय नमः ।  
वाण्या ॐङ्काररूपिण्या अन्त उक्तोऽस्य नान्यथा ।  
सुरस्त्रिभुवनेशः स नः सर्वान्तःस्थितोऽवतु ॥ १ ॥  
देवोऽयं सर्वदेवाद्यः सूरिरुन्मत्तवत्स्थितः ।  
वाहो बलीवर्दकोऽस्य याञ्चकस्येष्टदः स तु ॥ २ ॥  
नन्दिस्कन्धाधिरूढोऽपि त्रिप्रमित्यतिगः स्वभूः ।  
दशा यस्य न शम्भुं तं सन्तं वन्देऽखिलात्मकम् ॥ ३ ॥  
सद्योजातोऽष्टमूर्तिः स भूतवन्दिस्तुतो जितः ।  
रक्ष मन्मथहन्नाथ तोकधर्माणमद्य माम् ॥ ४ ॥  
स्वतो हेतोर्जगद्धेतो दयानाथाम्बिकापते ।  
तीव्रासुहृत्त्रिविधहृत्तापान्मृत्योश्च मामव ॥ ५ ॥  
कृतागसमपि त्राह्यत्रेर्मृत्योस्त्वं च भिषक्तमः ।  
तत्सन्धिं भिन्धि सर्वाकयोनेर्मुञ्चस्व मां शिव ॥ ६ ॥  
श्रीद पुष्टिद ते व्याप्तं दिक्षु क्षीरनिभं यशः ।  
रुञ्जार्ष्टिकृद्रक्ष मां त्वं गङ्गा यन्मूर्ध्नि चर्क्षराट् ॥ ७ ॥  
द्रष्टा वसति सर्वत्र बत मामीक्षसे न किम् ।  
स्तुतेर्धर्मेशशक्तिर्निरस्तमृत्योनमेजते ॥ ८ ॥  
तिष्ठानन्दद चित्ते मे समन्तात् परिपालय ॥ ९ ॥  
इति श्रीवासुदेवानन्दसरस्वतीविरचितं महारुद्रस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



*mahArudrastotram*

pdf was typeset on August 30, 2023



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

